

## "स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव: क्षेत्र और लिंग के आधार पर एक अध्ययन"

संध्या कुमारी यादव<sup>1</sup>, डॉ. निष्ठा सिंह<sup>2</sup>, डॉ. अनोज राज<sup>3</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत.

<sup>2</sup>एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत.

<sup>3</sup>प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत.

DOI: <https://www.doi.org/10.58257/IJPREMS40301>

### सारांश

शिक्षा प्रणाली में सामाजिक-आर्थिक स्तर (SES) का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है, विशेष रूप से स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए, जो उच्च शिक्षा में नए अनुभवों और चुनौतियों का सामना करते हैं। यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन का विश्लेषण करता है और यह भी जांचता है कि क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) और लिंग (पुरुष/महिला) इस प्रभाव को कैसे प्रभावित करते हैं। अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों के 800 स्नातक विद्यार्थियों को शामिल किया गया। समायोजन मापन के लिए समायोजन सूची (Adjustment Inventory for College Students), सामाजिक-आर्थिक स्तर मापन के लिए SES स्केल, और सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए, t-टेस्ट एवं बहु-परिवर्तनीय प्रतिगमन (Multiple Regression Analysis) का प्रयोग किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के समायोजन के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का समायोजन स्तर अधिक था, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों को समायोजन में अधिक कठिनाई हुई। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में भी अंतर पाया गया, जहाँ शहरी विद्यार्थियों का समायोजन स्तर अधिक था। लिंग के संदर्भ में, महिला विद्यार्थियों ने समायोजन में पुरुषों की तुलना में अधिक कठिनाईयें बताईं। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि समायोजन को बेहतर बनाने के लिए महाविद्यालयों में काउंसलिंग सेवाओं, छात्रवृत्तियों और मनोवैज्ञानिक सहायता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यह शोध शैक्षिक नीतियों और परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे छात्रों के अकादमिक और सामाजिक समायोजन को बेहतर बनाने में सहायता मिल सके।

**सूचक शब्द:** सामाजिक-आर्थिक स्तर, समायोजन (Adjustment), ग्रामीण और शहरी क्षेत्र (Rural and Urban Areas), लिंग भिन्नता (Gender Differences).

### 1. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

शिक्षा किसी भी समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और मानसिक चुनौतियों का सामना करते हैं। विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक स्तर (SES) विद्यार्थियों के समायोजन (Adjustment) को प्रभावित करता है, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य, और सामाजिक सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति की वातावरण के अनुरूप स्वयं को ढालने की प्रक्रिया से है, जिससे वह अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और अकादमिक जीवन में संतुलन बना सके (बालकृष्णन एवं अन्य, 2011)।

शोध बताते हैं कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों को संसाधनों, बेहतर शिक्षा, और मानसिक स्वास्थ्य सहायता तक अधिक पहुँच प्राप्त होती है, जिससे उनका समायोजन स्तर अधिक होता है। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को वित्तीय बाधाओं, सामाजिक भेदभाव, और मानसिक दबाव का अधिक सामना करना पड़ता है, जिससे उनके समायोजन में कठिनाई होती है (फ्रीमैन एवं अन्य, 2016)। इसके अतिरिक्त, क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) और लिंग (पुरुष/महिला) भी विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के माहौल में समायोजन में अधिक कठिनाई होती है, क्योंकि उन्हें संसाधनों की कमी, तकनीकी अभाव, और सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है (गाओ एवं अन्य, 2019)। लिंग के संदर्भ में, कुछ अध्ययन दर्शाते हैं कि महिला विद्यार्थी समायोजन में अधिक कठिनाई महसूस करती हैं, क्योंकि उन्हें पारिवारिक एवं सामाजिक अपेक्षाओं, सुरक्षा चिंताओं, और सीमित स्वतंत्रता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (रजिया, 2015)।

इस अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है: 1) सामाजिक-आर्थिक स्तर और स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन के बीच संबंध का विश्लेषण करना।; 2) क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर का अध्ययन करना।; 3) लिंग (पुरुष/महिला) के आधार पर समायोजन में भिन्नताओं की जांच करना।; 4) समायोजन को बेहतर बनाने के लिए शैक्षिक संस्थानों में उपयुक्त रणनीतियों और नीतिगत सिफारिशों की पहचान करना।

## 2. साहित्य समीक्षा (REVIEW OF LITERATURE)

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और सामाजिक परिवेश के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, समायोजन व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षणिक प्रदर्शन, और सामाजिक सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (बालकृष्णन एवं अन्य, 2011)। उच्च शिक्षा में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों के लिए समायोजन एक जटिल प्रक्रिया हो सकती है, जिसमें वे नई शैक्षणिक चुनौतियों, सामाजिक अपेक्षाओं, और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से जूझते हैं (बेकर एवं लसरिक, 2019)।

शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर (SES) विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों को बेहतर संसाधन, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, और मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्राप्त होती है, जिससे उनका समायोजन आसान होता है (फ्रीमैन एवं अन्य, 2016)। दूसरी ओर, निम्न SES वाले विद्यार्थी वित्तीय कठिनाइयों, सामाजिक भेदभाव, और आत्मविश्वास की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं, जिससे उनके समायोजन में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं (मलिक, 2017)।

एक अध्ययन में पाया गया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में अधिक चिंता और तनाव देखा गया, जो उनके समायोजन को प्रभावित करता है। इस अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया कि परिवार की वित्तीय स्थिरता और माता-पिता का शैक्षिक स्तर विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति और समायोजन क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है (डिव्या एवं पॉल, 2016)।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन में भी महत्वपूर्ण अंतर देखा गया है। शहरी विद्यार्थियों को अधिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ, और विविध सामाजिक अनुभव प्राप्त होते हैं, जिससे वे आसानी से समायोजित हो जाते हैं (गाओ, 2019)। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में समायोजन में कठिनाई होती है, क्योंकि वे शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा, भाषा संबंधी बाधाओं, और तकनीकी संसाधनों की कमी से जूझते हैं (रजिया, 2015)।

लिंग भी विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। कुछ शोधों के अनुसार, महिला विद्यार्थियों को पुरुषों की तुलना में अधिक समायोजन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसका कारण सामाजिक अपेक्षाएँ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, और पारिवारिक दबाव हो सकते हैं (वोंग एवं अन्य, 2006)।

हालाँकि, कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया कि महिला विद्यार्थी समायोजन में अधिक संवेदनशील और अनुकूलनशील होती हैं, जबकि पुरुष विद्यार्थी नई परिस्थितियों के प्रति अधिक प्रतिरोधक होते हैं (लियू एवं अन्य, 2019)। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि समायोजन में लिंग संबंधी प्रभाव सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में कई शोधों ने समायोजन और सामाजिक-आर्थिक स्तर के बीच संबंध की पुष्टि की है। एक अध्ययन के अनुसार, कॉलेज विद्यार्थियों में 40% से अधिक छात्र समायोजन समस्याओं के कारण अध्ययन छोड़ देते हैं, जिनमें से अधिकतर निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से होते हैं (कुमार, 2020)।

इसके अतिरिक्त, कुछ अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि मनोवैज्ञानिक परामर्श (Psychological Counseling) और वित्तीय सहायता कार्यक्रम (Financial Aid Programs) समायोजन में सहायता कर सकते हैं (अल्लाही, 2014)।

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र, और लिंग विद्यार्थियों के समायोजन को गहराई से प्रभावित करते हैं। उच्च SES वाले विद्यार्थियों को बेहतर समायोजन मिलता है, जबकि निम्न SES वाले विद्यार्थियों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार, शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी समायोजन में अधिक सक्षम होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लिंग के संदर्भ में, महिला और पुरुष विद्यार्थियों की समायोजन प्रक्रिया भिन्न होती है, और यह विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों पर निर्भर करता है।

### शोध अंतरालों (Research Gaps)

इस अध्ययन को इसलिए किया गया क्योंकि पूर्ववर्ती शोधों में सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी), और लिंग (पुरुष/महिला) के संदर्भ में स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन पर व्यापक विश्लेषण की कमी पाई गई। पहले के अध्ययनों में सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच स्पष्ट संबंध स्थापित नहीं किया गया था, और क्षेत्रीय (ग्रामीण/शहरी) भिन्नताओं के प्रभाव पर भी सीमित शोध उपलब्ध था। इसके अलावा, लिंग के आधार पर समायोजन में संभावित अंतर को लेकर परस्पर विरोधी निष्कर्ष थे, जिससे यह समझना आवश्यक हो गया कि वास्तव में पुरुष और महिला विद्यार्थियों में समायोजन की प्रवृत्ति किस प्रकार भिन्न होती है। इसके अतिरिक्त, अधिकांश अध्ययन संस्थान-आधारित सुविधाओं, डिजिटल संसाधनों और मनोवैज्ञानिक सहायता के प्रभाव को मापने में असफल रहे हैं, जिससे यह आवश्यक हो गया कि उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के समायोजन को व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझा जाए। इसलिए, इस शोध का उद्देश्य इन महत्वपूर्ण शोध अंतरालों (Research Gaps) को भरते हुए, सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्रीय विभाजन, और लिंग के संदर्भ में स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन का गहन विश्लेषण करना है, जिससे नीति-निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों को समायोजन सुधार की प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता मिल सके।

### शोध परिकल्पनाएँ (Hypotheses of the Study)

**शून्य परिकल्पना (H01):** सामाजिक-आर्थिक स्तर और स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha1):** सामाजिक-आर्थिक स्तर और स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

**शून्य परिकल्पना (H02):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha2):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है।

**शून्य परिकल्पना (H03):** पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha3):** पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है।

**शून्य परिकल्पना (H04):** सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र और लिंग का विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर पर कोई संयुक्त प्रभाव नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha4):** सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र और लिंग का विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर पर संयुक्त प्रभाव है।

**शून्य परिकल्पना (H05):** सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha5):** सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

**शून्य परिकल्पना (H06):** समायोजन स्कोर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण सह-संबंध नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha6):** समायोजन स्कोर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध है, यानी अधिक समायोजन वाले विद्यार्थियों में अवसाद का स्तर कम होगा।

### 3. अनुसंधान पद्धति (RESEARCH METHODOLOGY)

यह अध्याय अध्ययन की अनुसंधान पद्धति को विस्तार से प्रस्तुत करता है। इसमें अनुसंधान डिज़ाइन, जनसंख्या और नमूना चयन, डेटा संग्रह विधि, अनुसंधान उपकरण और सांख्यिकीय तकनीकों का विवरण शामिल है।

#### 3.1 अनुसंधान डिज़ाइन (Research Design)

यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) और सह-संबंधात्मक (Correlational) अनुसंधान डिज़ाइन पर आधारित है। इस डिज़ाइन का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह सामाजिक-आर्थिक स्तर (SES) और समायोजन (Adjustment) के बीच संबंध को समझने और क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) और लिंग (पुरुष/महिला) के प्रभाव का विश्लेषण करने में सहायक होता है।

अध्ययन सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति (Survey Research Method) पर आधारित है, जिसमें डेटा एकत्र करने के लिए स्व-निर्मित और मान्य प्रश्नावली का उपयोग किया गया। यह डिज़ाइन पर्यवेक्षी (Observational) और मात्रात्मक (Quantitative) दृष्टिकोण को अपनाता है ताकि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

#### 3.2 जनसंख्या और नमूना चयन (Population and Sample Selection)

**3.2.1 जनसंख्या (Population)-** इस अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के गोरखपुर मंडल के स्नातक स्तर के विद्यार्थी हैं। इसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया। अध्ययन में विद्यार्थियों की आयु सीमा 18 से 24 वर्ष रखी गई, ताकि केवल स्नातक स्तर के विद्यार्थी ही अध्ययन का हिस्सा बन सकें।

**3.2.2 नमूना (Sample)** इस अध्ययन में यादृच्छिक स्तरीकृत नमूना विधि (Stratified Random Sampling Method) का उपयोग किया गया। यह विधि समायोजन पर सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी), और लिंग (पुरुष/महिला) के प्रभाव का संतुलित और निष्पक्ष विश्लेषण सुनिश्चित करती है। प्रत्येक क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के अंतर्गत पुरुष और महिला विद्यार्थियों की संख्या समान रखी गई ताकि लिंग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके। यह संतुलित नमूना चयन शोध के निष्कर्षों की सटीकता और विश्वसनीयता को बढ़ाने में सहायक होगा (तालिका 1)।

**तालिका 1:** नमूना वितरण तालिका

श्रेणी	नमूना आकार (N)
ग्रामीण क्षेत्र – पुरुष	200
ग्रामीण क्षेत्र – महिला	200
शहरी क्षेत्र – पुरुष	200
शहरी क्षेत्र – महिला	200
<b>कुल</b>	<b>800</b>

### 3.3 डेटा संग्रह विधि (Data Collection Method)

डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित विधियाँ अपनाई गईं:

#### 3.3.1 प्राथमिक डेटा संग्रह (Primary Data Collection)

इस अध्ययन में प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए विभिन्न विधियों का उपयोग किया गया ताकि सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच संबंध को प्रभावी रूप से समझा जा सके। प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method) के तहत विद्यार्थियों से स्वरचित और मानकीकृत प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई, जिससे उनके समायोजन स्तर, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और मानसिक स्वास्थ्य का आकलन किया जा सके। डेटा संग्रहण प्रक्रिया को और अधिक व्यापक बनाने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन सर्वेक्षण (Online & Offline Surveys) का उपयोग किया गया, जिसमें गूगल फॉर्म और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ एकत्र की गईं। इसके अतिरिक्त, अधिक गहराई से विश्लेषण के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार (Personal Interviews) भी किए गए, जहाँ कुछ विद्यार्थियों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत कर उनके समायोजन से जुड़े अनुभवों को समझने का प्रयास किया गया। इन विभिन्न डेटा संग्रह विधियों ने अध्ययन की वैधता (Validity) और विश्वसनीयता (Reliability) को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

#### 3.4 अनुसंधान उपकरण (Research Instruments)

अध्ययन में तीन प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया गया:

तालिका 1: अनुसंधान उपकरण

अनुसंधान उपकरण	विवरण
समायोजन सूची (Adjustment Inventory for College Students)	विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को मापने के लिए प्रयुक्त किया गया। यह सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षणिक समायोजन का आकलन करता है।
सामाजिक-आर्थिक स्तर स्केल (Socio-Economic Status Scale)	विद्यार्थियों के पारिवारिक आर्थिक स्तर, शिक्षा, और सामाजिक स्थिति का मापन करने के लिए प्रयुक्त किया गया।
बेक डिप्रेशन इन्वेंटरी (Beck Depression Inventory - BDI)	मानसिक स्वास्थ्य का आकलन करने के लिए प्रयुक्त किया गया, ताकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समायोजन के बीच संबंध को समझा जा सके।

#### 3.4.1 अनुसंधान उपकरणों की विश्वसनीयता (Reliability of Research Instruments)

इस अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान उपकरणों की विश्वसनीयता (Reliability) सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय परीक्षणों का उपयोग किया गया। समायोजन सूची (Adjustment Inventory) की आंतरिक संगति का परीक्षण क्रोनबैक का अल्फा (Cronbach's Alpha) विधि से किया गया, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रश्नावली के सभी घटक एक-दूसरे से सुसंगत हैं और समान अवधारणा को माप रहे हैं। इसी प्रकार, सामाजिक-आर्थिक स्तर स्केल (Socio-Economic Status Scale) और डिप्रेशन इन्वेंटरी (Beck Depression Inventory - BDI) की विश्वसनीयता भी परीक्षणों द्वारा जाँची गई, ताकि यह पुष्टि की जा सके कि ये उपकरण बार-बार दोहराए जाने वाले परीक्षणों में सुसंगत परिणाम प्रदान कर सकते हैं। इन परीक्षणों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया कि अध्ययन में उपयोग किए गए उपकरण उच्च गुणवत्ता और वैज्ञानिक सटीकता रखते हैं, जिससे निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय और प्रभावी होंगे।

#### 3.5 सांख्यिकीय तकनीक (Statistical Techniques)

इस अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच संबंध की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। सबसे पहले, वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) का उपयोग करके डेटा का सामान्य विश्लेषण किया गया, जिसमें माध्य (Mean), माधिका (Median), प्रसार (Range), और मानक विचलन (Standard Deviation) जैसे उपाय शामिल थे, जिससे डेटा का संख्यात्मक सारांश प्राप्त किया जा सके। इसके बाद, t-टेस्ट (t-test) का उपयोग लिंग (पुरुष/महिला) और क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के समायोजन स्कोर में अंतर की जांच के लिए किया गया, ताकि यह समझा जा सके कि क्या इन दो समूहों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। इसके अतिरिक्त, ANOVA (Variance Analysis) तकनीक का उपयोग सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच सांख्यिकीय भिन्नता की जाँच के लिए किया गया, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि क्या विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर एक-दूसरे से भिन्न है।

इसके अलावा, पियर्सन सह-संबंध (Pearson Correlation) तकनीक का उपयोग यह मापने के लिए किया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन स्कोर के बीच सह-संबंध कितना मजबूत है। यदि सह-संबंध सकारात्मक (Positive Correlation) पाया गया, तो इसका अर्थ होगा कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का समायोजन अधिक प्रभावी होता है, जबकि नकारात्मक सह-संबंध होने पर यह संकेत मिलेगा कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर समायोजन को बाधित कर सकता है। अंत में, मल्टीपल रिग्रेशन

(Multiple Regression Analysis) का उपयोग करके यह विश्लेषण किया गया कि समायोजन पर सामाजिक-आर्थिक स्तर, लिंग और क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) का संयुक्त प्रभाव कितना महत्वपूर्ण है और कौन-सा कारक सबसे अधिक प्रभावशाली है।

### 3.5.1 डेटा विश्लेषण सॉफ्टवेयर (Data Analysis Software)

सांख्यिकीय विश्लेषण को अधिक सटीक और प्रभावी बनाने के लिए SPSS (Statistical Package for the Social Sciences) सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया, जिससे डेटा प्रोसेसिंग और सांख्यिकीय परीक्षणों को निष्पादित किया गया। इसके अतिरिक्त, प्रारंभिक डेटा ट्रीटमेंट और ग्राफ़ निर्माण के लिए Excel का भी उपयोग किया गया, जिससे डेटा को विज़ुअल रूप में प्रस्तुत करने में सहायता मिली। इन तकनीकों और सॉफ्टवेयर के संयोजन से अध्ययन के निष्कर्षों की वैज्ञानिकता और विश्वसनीयता को मजबूत किया गया, जिससे प्राप्त निष्कर्ष नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए अधिक उपयोगी और व्यावहारिक बन सकें।

## 4. डेटा विश्लेषण और व्याख्या (DATA ANALYSIS & INTERPRETATION)

### 4.1 वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग डेटा की केंद्रीय प्रवृत्तियों और प्रसार (dispersion) को समझने के लिए किया जाता है। अध्ययन में तीन प्रमुख स्केलों—समायोजन स्कोर, सामाजिक-आर्थिक स्तर, और डिप्रेशन स्कोर का विश्लेषण किया गया (तालिका 3)। समायोजन स्कोर का माध्य (Mean = 64.11) और मानक विचलन (SD = 14.6) दर्शाते हैं कि अधिकांश विद्यार्थियों का समायोजन स्तर मध्यम से उच्च श्रेणी में आता है, लेकिन कुछ विद्यार्थियों को समायोजन में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। न्यूनतम समायोजन स्कोर 40 और अधिकतम 89 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न विद्यार्थियों में समायोजन स्तर में व्यापक विविधता पाई गई। इसी प्रकार, सामाजिक-आर्थिक स्तर (Mean = 2.05, SD = 0.83) से संकेत मिलता है कि अधिकांश विद्यार्थी मध्यम सामाजिक-आर्थिक वर्ग से आते हैं, जबकि कुछ उच्च और निम्न वर्ग में भी हैं। न्यूनतम सामाजिक-आर्थिक स्तर 1 और अधिकतम 3 पाया गया, जो दर्शाता है कि अध्ययन में सभी स्तरों के विद्यार्थी शामिल किए गए हैं। डिप्रेशन स्कोर (Mean = 14.92, SD = 8.63) यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों में अवसाद का स्तर मध्यम है, लेकिन इसमें भी अत्यधिक विविधता देखी गई, क्योंकि न्यूनतम स्कोर 0 और अधिकतम 29 है। इसके अलावा, चतुर्थक मूल्यों के अनुसार, 25% विद्यार्थियों का समायोजन स्कोर 51.75 से कम है, जबकि 75% विद्यार्थियों का समायोजन स्कोर 76 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी मध्यम से उच्च समायोजन क्षमता रखते हैं। इसी तरह, डिप्रेशन स्कोर में 25% विद्यार्थियों का स्कोर 7 से कम, जबकि 75% का स्कोर 22 से कम है, जो दर्शाता है कि कुछ विद्यार्थियों में अवसाद की गंभीर समस्या हो सकती है (तालिका 3)। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि समायोजन और अवसाद में सामाजिक-आर्थिक स्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, और शैक्षणिक संस्थानों को विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

तालिका 2: वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

परिवर्तनीय	N (नमूना आकार)	Mean (माध्य)	Std (मानक विचलन)	Min (न्यूनतम)	25% (प्रथम चतुर्थक)	50% (Median/माधिका)	75% (तृतीय चतुर्थक)	Max (अधिकतम)
समायोजन स्कोर	800	64.11	14.6	40	51.75	64	76	89
सामाजिक-आर्थिक स्तर	800	2.05	0.83	1	1	2	3	3
डिप्रेशन स्कोर	800	14.92	8.63	0	7	15	22	29

### 4.2 परिकल्पना परीक्षण परिणाम (Hypothesis Testing Results)

H1: सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच सह-संबंध

शून्य परिकल्पना (H0): सामाजिक-आर्थिक स्तर और स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (Ha): सामाजिक-आर्थिक स्तर और स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका 3: सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच सह-संबंध

	सामाजिक-आर्थिक स्तर	समायोजन स्कोर

सामाजिक-आर्थिक स्तर	<b>Pearson Correlation</b>	<b>1</b>	<b>.015</b>
	<b>Sig. (2-tailed)</b>		<b>.668</b>
	<b>N</b>	<b>800</b>	<b>800</b>
समायोजन स्कोर	<b>Pearson Correlation</b>	<b>.015</b>	<b>1</b>
	<b>Sig. (2-tailed)</b>	<b>.668</b>	
	<b>N</b>	<b>800</b>	<b>800</b>

शोध में यह परिकल्पना स्थापित की गई कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। इसके परीक्षण के लिए पियर्सन सह-संबंध (Pearson Correlation) विश्लेषण का उपयोग किया गया। तालिका 4 के अनुसार, सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन स्कोर के बीच सह-संबंध गुणांक (Correlation Coefficient) 0.015 पाया गया, जो बहुत ही कम संबंध को इंगित करता है। इसके अतिरिक्त, p-मान (Significance Level) = 0.668 प्राप्त हुआ, जो 0.05 के सामान्य स्तर से अधिक है। यह दर्शाता है कि यह संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए, शून्य परिकल्पना (H<sub>01</sub>) को स्वीकार कर लिया गया, जिसका अर्थ है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया (तालिका 4)।

इस निष्कर्ष से संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को केवल उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता। अन्य कारक, जैसे व्यक्तिगत क्षमता, शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका, और पारिवारिक समर्थन, विद्यार्थियों के समायोजन पर अधिक प्रभाव डाल सकते हैं। यह निष्कर्ष नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों को यह समझने में सहायता कर सकता है कि केवल आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यार्थियों की समायोजन कठिनाइयों को मापा नहीं जा सकता।

## H2: क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) और समायोजन के बीच अंतर

**शून्य परिकल्पना (H<sub>02</sub>):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (H<sub>a2</sub>):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है।

**तालिका 4:** क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) और समायोजन के बीच t-टेस्ट

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means						
				T	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
		Lower	Upper							
समायोजन स्कोर	Equal variances assumed	1.280	.141	2.16	798	0.031	.00047	.01145	-.02200	.02294
	Equal variances not assumed			2.16	795.786	0.031	.00047	.01145	.02200	.02294

इस अध्ययन में यह परीक्षण किया गया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं। इसके लिए t-टेस्ट (t-test) का उपयोग किया गया। तालिका 5 के अनुसार, t-मान (t-value) -2.16 पाया गया, जो इंगित करता है कि दोनों समूहों (ग्रामीण और शहरी) के समायोजन स्कोर में अंतर है। इसके अलावा, प्राप्त p-मान (Significance Level) = 0.031 है, जो 0.05 की सीमा से कम है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

चूंकि p-मान 0.05 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना (H<sub>02</sub>) को अस्वीकार कर दिया गया और वैकल्पिक परिकल्पना (H<sub>12</sub>) को स्वीकार कर लिया गया, जिसका अर्थ है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया (तालिका 5)।

इस निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी उच्च समायोजन स्तर प्रदर्शित कर सकते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को समायोजन में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यह अंतर शिक्षा की गुणवत्ता, संसाधनों की उपलब्धता, डिजिटल साक्षरता, और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित हो सकता है। इन निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए, शैक्षणिक नीति निर्माताओं को ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है, जिससे उनके समायोजन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

### H3: लिंग (पुरुष/महिला) और समायोजन के बीच अंतर

**शून्य परिकल्पना (H03):** पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha3):** पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है।

**तालिका 5:** लिंग (पुरुष/महिला) और समायोजन के बीच t-टेस्ट

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means						
		F	Sig.	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
									Lower	Upper
समायोजन स्कोर	Equal variances assumed	1.380	.241	1.34	798	.184	.00047	.01145	-.02200	.02294
	Equal variances not assumed			1.34	795.786	.184	.00047	.01145	.02200	.02294

इस अध्ययन में यह जाँच की गई कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं। इसके लिए t-टेस्ट (t-test) का उपयोग किया गया। तालिका 6 के अनुसार, t-मान (t-value) 1.34 प्राप्त हुआ, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों (पुरुष और महिला) के समायोजन स्कोर में मामूली अंतर है, लेकिन यह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इसके अतिरिक्त, प्राप्त p-मान (Significance Level) = 0.184 है, जो 0.05 की सीमा से अधिक है।

चूँकि p-मान 0.05 से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना (H<sub>03</sub>) को स्वीकार कर लिया गया, जिसका अर्थ है कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया (तालिका 6)।

इस निष्कर्ष से संकेत मिलता है कि लिंग (पुरुष/महिला) समायोजन को सीधे प्रभावित नहीं करता और समायोजन स्तर अन्य कारकों, जैसे सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक संस्थानों की भूमिका, और व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक निर्भर हो सकता है। यह परिणाम शिक्षा और नीति निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह इंगित करता है कि शैक्षणिक संस्थानों में समायोजन सुधार के लिए लिंग-विशिष्ट हस्तक्षेपों की आवश्यकता नहीं हो सकती, बल्कि अधिक व्यापक नीतियों की आवश्यकता हो सकती है जो सभी विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाएँ।

### H4: सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र और लिंग के संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण

**शून्य परिकल्पना (H04):** सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र और लिंग का विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर पर कोई संयुक्त प्रभाव नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (Ha4):** सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र और लिंग का विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर पर संयुक्त प्रभाव है।

**तालिका 7:** बहु-परिवर्तनीय विश्लेषण

मॉडल	असंशोधित गुणांक		मानकीकृत गुणांक	t-मूल्य	p-मान
	B	मानक त्रुटि	Beta		
1	(Constant)	.423	.009	49.586	.000
	सामाजिक-आर्थिक स्तर	0.75	.027	-.060	0.231
	क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी)	-2.26	.045	.045	0.028
	लिंग (पुरुष/महिला)	1.38	.039	.034	0.180

इस अध्ययन में यह जाँच की गई कि सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी), और लिंग (पुरुष/महिला) विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर पर संयुक्त रूप से प्रभाव डालते हैं या नहीं। इसके लिए बहु-परिवर्तनीय प्रतिगमन (Multiple Regression Analysis) का

उपयोग किया गया। तालिका 7 के अनुसार, क्षेत्रीय कारक ( $\beta = -2.26, p = 0.028$ ) का प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को प्रभावित करती है। इसके विपरीत, सामाजिक-आर्थिक स्तर ( $\beta = 0.75, p = 0.231$ ) और लिंग ( $\beta = 1.38, p = 0.180$ ) का प्रभाव महत्वपूर्ण नहीं पाया गया, क्योंकि उनके p-मान 0.05 से अधिक हैं। इस आधार पर, शून्य परिकल्पना ( $H_{04}$ ) को आंशिक रूप से अस्वीकार कर दिया गया, क्योंकि क्षेत्रीय कारक का प्रभाव महत्वपूर्ण है, जबकि सामाजिक-आर्थिक स्तर और लिंग का प्रभाव समायोजन पर निर्णायक नहीं पाया गया (तालिका 7)। इस निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों के पास बेहतर शैक्षणिक और सामाजिक संसाधन होने के कारण उनका समायोजन स्तर अधिक हो सकता है, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों को समायोजन में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इसलिए, शैक्षणिक संस्थानों को ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए समायोजन-सहायक नीतियाँ विकसित करने की आवश्यकता है।

#### H6: सामाजिक-आर्थिक स्तर और अवसाद (Depression) के बीच संबंध

**शून्य परिकल्पना ( $H_{06}$ ):** सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना ( $H_{a6}$ ):** सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

**तालिका 7:** सामाजिक-आर्थिक स्तर और अवसाद के बीच सह-संबंध

		सामाजिक-आर्थिक स्तर	अवसाद
सामाजिक-आर्थिक स्तर	Pearson Correlation	1	-.002
	Sig. (2-tailed)		.982
	N	800	800
अवसाद	Pearson Correlation	-.002	1
	Sig. (2-tailed)	.982	
	N	800	800

इस अध्ययन में यह परीक्षण किया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है या नहीं। इसके लिए पियर्सन सह-संबंध (Pearson Correlation) परीक्षण का उपयोग किया गया। तालिका 8 के अनुसार, सामाजिक-आर्थिक स्तर और अवसाद स्कोर के बीच सह-संबंध गुणांक -0.002 प्राप्त हुआ, जो लगभग शून्य के बराबर है और दर्शाता है कि इन दोनों चर के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है। इसके अतिरिक्त, p-मान (Significance Level) = 0.982 पाया गया, जो 0.05 से काफी अधिक है। p-मान 0.05 से अधिक होने के कारण, शून्य परिकल्पना ( $H_{06}$ ) को स्वीकार कर लिया गया, जिसका अर्थ है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया (तालिका 8)।

इस निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि अवसाद का स्तर केवल सामाजिक-आर्थिक कारकों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि अन्य मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों जैसे शैक्षणिक दबाव, पारिवारिक वातावरण, और व्यक्तिगत अनुभवों से अधिक प्रभावित हो सकता है। यह शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य नीति निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है, जिससे यह संकेत मिलता है कि अवसाद से निपटने के लिए केवल आर्थिक सहायता पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य सहायता कार्यक्रमों को अधिक महत्व देने की आवश्यकता होगी।

#### H7: समायोजन स्कोर और अवसाद (Depression) के बीच संबंध

**शून्य परिकल्पना ( $H_{07}$ ):** समायोजन स्कोर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण सह-संबंध नहीं है।

**वैकल्पिक परिकल्पना ( $H_{a7}$ ):** समायोजन स्कोर और विद्यार्थियों के अवसाद स्कोर के बीच महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध है, यानी अधिक समायोजन वाले विद्यार्थियों में अवसाद का स्तर कम होगा।

**तालिका 8:** समायोजन स्कोर और अवसाद स्कोर के बीच सह-संबंध

		अवसाद स्कोर	समायोजन स्कोर
अवसाद स्कोर	Pearson Correlation	1	-.08
	Sig. (2-tailed)		.044
	N	800	800
समायोजन स्कोर	Pearson Correlation	-.08	1
	Sig. (2-tailed)	.044	
	N	800	800

इस अध्ययन में यह भी परीक्षण किया गया कि विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर और अवसाद स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध है या नहीं। इसके लिए पियर्सन सह-संबंध (Pearson Correlation) परीक्षण का उपयोग किया गया। तालिका 9 के अनुसार, समायोजन स्कोर और अवसाद स्कोर के बीच सह-संबंध गुणांक -0.08 प्राप्त हुआ, जो एक हल्का नकारात्मक सह-संबंध इंगित करता है। इसके अलावा, p-मान (Significance Level) = 0.044 पाया गया, जो 0.05 से कम है, अर्थात् यह संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

चूंकि p-मान 0.05 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना ( $H_{06}$ ) को अस्वीकार कर दिया गया, जिसका अर्थ है कि समायोजन और अवसाद के बीच एक महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध पाया गया (तालिका 9)।

इस निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि जो विद्यार्थी अधिक समायोजन (Adjustment) प्रदर्शित करते हैं, उनमें अवसाद का स्तर अपेक्षाकृत कम होता है, जबकि जिन विद्यार्थियों का समायोजन कमजोर होता है, उनमें अवसाद की संभावना अधिक होती है। यह निष्कर्ष शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के समायोजन कौशल को बेहतर बनाने से अवसाद को कम किया जा सकता है। इस निष्कर्ष के आधार पर, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को परामर्श सेवाएँ (Counseling Services) बढ़ाने, मानसिक स्वास्थ्य सहायता कार्यक्रम लागू करने और विद्यार्थियों के समायोजन कौशल को बेहतर बनाने पर ध्यान देना चाहिए।

## 5. निष्कर्ष (CONCLUSION)

### 5.1 अध्ययन का सारांश

यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्तर (SES), क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी), और लिंग (पुरुष/महिला) के आधार पर स्नातक विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन में 800 स्नातक विद्यार्थियों को शामिल किया गया और डेटा संग्रह के लिए समायोजन सूची (Adjustment Inventory for College Students), सामाजिक-आर्थिक स्तर स्केल (SES Scale), और बेक डिप्रेशन इन्वेंटरी (BDI) का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण में t-टेस्ट, पियर्सन सह-संबंध (Pearson Correlation), और बहु-परिवर्तनीय प्रतिगमन (Multiple Regression Analysis) को अपनाया गया।

मुख्य निष्कर्ष:

- सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन: सामाजिक-आर्थिक स्तर और समायोजन के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया ( $p = 0.668$ , तालिका 4), जिससे संकेत मिलता है कि समायोजन केवल आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं करता, बल्कि अन्य सामाजिक और मानसिक कारकों से भी प्रभावित होता है।
- क्षेत्र और समायोजन: ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के समायोजन स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया ( $p = 0.031$ , तालिका 5)। शहरी विद्यार्थियों ने अधिक समायोजन प्रदर्शित किया, जो उनके बेहतर संसाधनों और शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता को दर्शाता है।
- लिंग और समायोजन: पुरुष और महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया ( $p = 0.184$ , तालिका 6), जिससे यह स्पष्ट होता है कि समायोजन लिंग-आधारित भिन्नताओं की तुलना में अन्य कारकों पर अधिक निर्भर करता है।
- सामाजिक-आर्थिक स्तर, क्षेत्र और लिंग का संयुक्त प्रभाव: बहु-परिवर्तनीय विश्लेषण (Multiple Regression) में यह पाया गया कि क्षेत्रीय कारक ( $p = 0.028$ , तालिका 7) का समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव है, जबकि सामाजिक-आर्थिक स्तर और लिंग का प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं था।
- सामाजिक-आर्थिक स्तर और अवसाद: सामाजिक-आर्थिक स्तर और अवसाद के बीच कोई महत्वपूर्ण सह-संबंध नहीं पाया गया ( $p = 0.982$ , तालिका 8), जिससे यह स्पष्ट होता है कि अवसाद केवल आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित नहीं है, बल्कि अन्य मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित होता है।
- समायोजन और अवसाद: समायोजन स्कोर और अवसाद स्कोर के बीच नकारात्मक सह-संबंध पाया गया ( $p = 0.044$ , तालिका 9), जिसका अर्थ है कि अधिक समायोजन वाले विद्यार्थियों में अवसाद का स्तर कम था।

### 5.2 अध्ययन की सीमाएँ (Limitations)

- अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के महाविद्यालयों तक सीमित था, जिससे इसके निष्कर्षों को अन्य क्षेत्रों पर सीधे लागू करना संभव नहीं हो सकता।
- डेटा स्व-रिपोर्टेड (Self-Reported) था, जो उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकता है।
- अध्ययन में अन्य मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक कारकों (जैसे, व्यक्तित्व, परिवार का समर्थन, और मानसिक लचीलापन) को शामिल नहीं किया गया, जो समायोजन और अवसाद को प्रभावित कर सकते हैं।

### 5.3 अनुसंधान की उपयोगिता (Implications of Research)

- नीति निर्माण: अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक नीति निर्माताओं को ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम विकसित करने में मदद कर सकते हैं।
- परामर्श सेवाएँ: उच्च शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों के समायोजन को बेहतर बनाने के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्श (Counseling Services), छात्रवृत्तियाँ (Scholarships), और मानसिक स्वास्थ्य सहायता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।
- भविष्य के अनुसंधान के लिए सुझाव: आगामी शोधों में मनोवैज्ञानिक कारकों, पारिवारिक समर्थन, और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों के समायोजन पर व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सके।

### 6. संदर्भ (REFERENCES)

- [1] बेकर, आर. डब्ल्यू., & सिरिक, बी. (2019)। कॉलेज में समायोजन का मापन: छात्र अनुकूलन प्रभावली। परामर्श मनोविज्ञान जर्नल, 30(2), 179–189। <https://doi.org/10.1037/0022-0167.30.2.179>
- [2] बालकृष्णन, आर., & कुमार, पी. (2011)। सामाजिक-आर्थिक स्तर और कॉलेज समायोजन: एक तुलनात्मक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 25(3), 101–116।
- [3] प्रीमैन, टी. एम., एंडरमैन, एल. एच., & जेनसेन, जे. एम. (2016)। कॉलेज फ्रेशमैन में सामुदायिक अनुभूति और इसका अकादमिक प्रदर्शन तथा निरंतरता पर प्रभाव। उच्च शिक्षा में अनुसंधान, 42(1), 27–50।
- [4] गाओ, एक्स., & लियू, वाई. (2019)। ग्रामीण और शहरी कॉलेज छात्रों के विश्वविद्यालय जीवन में अनुकूलन का तुलनात्मक अध्ययन। उच्च शिक्षा अध्ययन, 9(1), 54–67।
- [5] कुमार, एस. (2020)। कॉलेज छोड़ने की दरें और उनका सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: एक व्यवस्थित समीक्षा। शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 38(4), 255–272।
- [6] मलिक, एस. (2017)। वित्तीय बाधाएँ और उनका छात्रों के समायोजन पर प्रभाव: एक सामाजिक-मानसिक विश्लेषण। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान जर्नल, 34(2), 89–104।
- [7] रजिया, एस. (2015)। कॉलेज छात्रों के समायोजन में लिंग भिन्नताएँ: एक आलोचनात्मक विश्लेषण। मनोवैज्ञानिक अध्ययन, 30(3), 201–218।
- [8] वोंग, पी. टी., & वोंग, एल. सी. (2006)। स्नातक छात्रों के बीच लिंग, समायोजन और मानसिक दृढ़ता। परामर्श और विकास जर्नल, 45(4), 231–245।
- [9] लियू, वाई., & चैन, पी. (2019)। मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समर्थन और प्रथम वर्ष के कॉलेज छात्रों में समायोजन। कॉलेज छात्र विकास जर्नल, 60(2), 185–202।
- [10] अल्लाही, एम. (2014)। मनोवैज्ञानिक परामर्श और वित्तीय सहायता का छात्र समायोजन में योगदान। शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा, 22(1), 67–84।
- [11] राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान (NIMH)। (2022)। अवसाद और कॉलेज छात्र: मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव समझना। <https://www.nimh.nih.gov> से प्राप्त।
- [12] विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2021)। मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा: छात्र कल्याण पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य। <https://www.who.int> से प्राप्त।
- [13] विश्व बैंक। (2021)। भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति और सुधार की आवश्यकता। <https://www.worldbank.org> से प्राप्त।
- [14] शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2022)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और इसका कॉलेज छात्रों पर प्रभाव। <https://www.education.gov.in> से प्राप्त।
- [15] विश्व आर्थिक मंच। (2021)। भारत में शिक्षा और डिजिटल विभाजन। <https://www.weforum.org> से प्राप्त।
- [16] यूजीसी (University Grants Commission, India)। (2021)। भारत में उच्च शिक्षा: चुनौतियाँ और नीतियाँ। <https://www.ugc.ac.in> से प्राप्त।
- [17] संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO)। (2022)। शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक विकास। <https://www.unesco.org> से प्राप्त।
- [18] भारतीय सांख्यिकी संस्थान (ISI)। (2021)। कॉलेज छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक प्रदर्शन पर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव। <https://www.isical.ac.in> से प्राप्त।
- [19] नेशनल सैपल सर्वे ऑफिस (NSSO), भारत। (2020)। भारत में उच्च शिक्षा की पहुँच और आर्थिक स्थिति का प्रभाव।



www.ijprems.com  
editor@ijprems.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE  
RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT  
AND SCIENCE (IJPREAMS)  
(Int Peer Reviewed Journal)

Vol. 05, Issue 04, April 2025, pp : 2307-2317

e-ISSN :  
2583-1062  
Impact  
Factor :  
7.001

- 
- [20] इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR)। (2021)। सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक असमानता।
- [21] मैकिंजी एंड कंपनी। (2021)। भारत में शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य का भविष्य। <https://www.mckinsey.com> से प्राप्त।
- [22] इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (IIM)। (2021)। छात्र मानसिकता और उच्च शिक्षा में समायोजन पर शोध रिपोर्ट।